साहित्य की विधाएं

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज जहानाबाद।

हृदय में जब ~~भ~~ अनुभूतियों की प्रगाढ़ता अन्तःमन में रोके न रुकें और अभिव्यक्ति की मांग करती हैं तभी साहित्य का जन्म होता है। रचनात्मक प्रतिष्ठा के विद्यार्थियों के लिए साहित्य एवं साहित्य की विधाओं के सम्बन्ध में ज्ञान होना अनिवार्य है। जब हम साहित्य की बात करते हैं तो प्रश्न उठता है साहित्य क्यों? जैसा कि ऊपर में लिखा गया है कि भावनाओं और अनुभूतियों का उभार जब हृदय में अभिव्यक्ति की आवश्यकता अनुभव करते हैं तब साहित्य के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार होती है। संस्कृत साहित्य में साहित्य के स्वरूप उसके निर्माण की स्थितियां इत्यादि पर विस्तार से विचार किया गया है। वहाँ साहित्य एवं काव्य समानार्थी हैं अतः दोनों का विवेचन एक ही साथ किया गया है। साहित्य की व्याख्या के क्रम में कहा गया कि सहित होने का भाव साहित्य है- "सहितस्य भाव साहित्यम्"। यहाँ सहित शब्द यौगिक और रूढ़ दोनों है। सहित एक शब्द है जिसका अर्थ होता है साथ, युक्त, मिला होना इत्यादि। अर्थात जिसमें युक्तता या साथ होने का भाव हो वह साहित्य है। किन्तु जब हम सहित को स+हित का अर्थ ग्रहण करते हैं तब अर्थ बदल जाता है - स = साथ, सहित, एवं हित का अर्थ कल्याण, मंगल, अनुकूलता। यानी जिसमें मंगलकामना हो. जिसमें मंगल ~~अस~~ अर्थात् कल्याण के साथ युक्तता का भाव हो वह साहित्य है। तात्पर्य यह कि जिसे हम साहित्य कहते हैं उसमें लोकमंगल का विधान होना अनिवार्य है और एकत्व का भाव युक्तता का भाव होना भी अनिवार्य है। कहने का तात्पर्य

है कि जिसमें द्वेष और विभाजनकारी भावनाएं भरी हुयी हैं, जहाँ मानवमात्र में विभेद और उसके अकल्याण की, आपसी वैमनस्य एवं समाज को विभिन्न आधारों पर खंडित एवं विभाजित करने का भाव हो, वहाँ साहित्य नहीं हो सकता। हम कह सकते हैं कि जहाँ वह लिखित रूप जहाँ मानवीय कल्याण एवं लोकमंगल के साथ सामाजिक युक्तता या एकता का भाव अभिव्यक्त होता है उसे साहित्य कहा जा सकता है। अभी मैं साहित्य के विस्तार में नहीं जाना चाहता वरन साहित्य या काव्य की एक, दो परिभाषाओं के सम्बन्ध में बात करना चाहता हूँ। पंडितराज जगन्नाथ ने अपने ग्रंथ साहित्य दर्पण में कहा 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्य।' रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है। उसी प्रकार आचार्य विश्वनाथ ने काव्य को पारिभाषित करते हुए लिखा है- 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्' अर्थात् रसमय वाक्य काव्य है। इन परिभाषाओं में ~~[illegible]~~ 'रमणीयार्थ' और रसात्मक वाक्य विशद विवेचन, विश्लेषण की अपेक्षा रखते हैं। सम्पूर्णता जाए तो इस संक्षिप्त सी परिभाषा में वहे गहरे निहितार्थ छिपे हैं क्योंकि 'रसात्मक वाक्य' में बहुत बड़ी बातें स्पष्ट किए जाने की अपेक्षा रखती हैं। वैसे ही रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द की भी स्थिति है। ~~[illegible]~~ "आरपार्थनेस आफ आरट बोरे" कह कर इस मन्तव्य को नहीं छोड़ते हैं। भारतीय और पाश्चात्य आचार्यों की परिभाषाओं के विवेचन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता की परिभाषा समीचीन प्रतीत होती "Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings it takes its origin in tranquility..." इसमें कुछ बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं - Spontaneous overflow, Powerful feelings.

शक्तिशाली अनुभूतियाँ जब हृदय का बाँध तोड़कर प्रवाहित होने लगती हैं तब कविता जन्म लेती है। भावनाओं का सहज उच्छलन ही कविता की पृष्ठभूमि है। यदि अनुभूतियां प्रबल नहीं हुयीं तो कविता पैदा नहीं होगी। यह कविता के जन्म की समस्या को समेटने वाली परिभाषा है।